सफलता की कहानी

मै ईस प्रकार से धान नर्सरी से बहुत अधिक खुश हु । अपने खेत मे इससे पहले चार पाथी धान का नर्सरी करता था जिसमे 5 से 8 क्युन्टल अत्पादन होता था लेकिन इस साल कम से कम 10 क्युन्टल अत्पादन होने संभावना है। इस प्रकार का नर्सरी मै पहली बार देख रहा हुँ। जो की मेरा हाईब्रिड धान का बीज के नर्सरी मे गाछ निकलते देखा जो रोंपनी के 15 दिन बाद वीडर चलाने पर 20 से 25 गच्छिया है। इसे देखकर हमको यह लगता है कि हम गरीब किसानों के लिये एक वरदान स्वरूप होगा कोई भी छोटा किसान या बडा किसान इस प्रकार श्री विधि से धान एवं मक्का दलहन तिलहन और सब्जी की खेती कर अपने आर्थिक स्थिति मजबुत व सफल हो सकता है ।

सफलता की यह कहानी छत्तीसगढ़ राज्य के जिला बलरामपुर के शंकरगढ़ विकासखण्ड अंतर्गत् ग्राम पंचायत खैराडीह के जनेश्वर राम उरावं की है जनेश्वर राम उरावं आदिवासी समुदाय से सम्बंध रखता है एवं ग्राम खैराडीह में विगत् 150 साल से भी ज्यादा समय से इनका परिवार निवासरत् है।स्वभाव में सीधा–सादा, हंसमुख एवं कुछ नया करने हेतु सदैव तत्पर रहते है । वर्तमान् में जनेश्वर राम के परिवार में पत्नी के अलावा 1 बालक एवं पिता जी साथ में है। बालक अम्बिकापुर में रह कर पढाई करता है। जनेश्वर राम मुख्य रुप से कृषक है इसके अलावा मनरेगा में मजदूरी करना तथा घर पर अपने उपयोग के लिए बढइगिरी का काम करना जैसें नागर बनाने का काम करना व पशुपालन इनके अन्य आय का स्रोत है। जनेश्वर राम बहुत ही लगनशील एवं परिश्रमी व्यक्ति हैं इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि प्रायः दिन में मनरेगा अंतर्गत् मजदूरी कर अपने खेत में कुछ न कुछ सब्जी की खेती करने का प्रयास करता रहता हैं। जैसे मौसमी आधारित मिर्चा, अदरक, साकिन, कंदा, टमाटर यादि करने में लगा रहता हैं। लेकिन सिचाई का साधन न होने के कारण एवं पूंजी के अभाव व तकनीकी ज्ञान के बिना जनेश्वर राम ने हमेशा अपने तरीके से खेती करने के लिऐ सोचा करता था जनेश्वर राम का रुझान कृषि व सब्जी खेती में बहुत ज्यादा है इस हेतु उनके हिस्से में करीब 6 एकड़ पुरखौती जमीन आती है जिसमें वह हाइब्रिड एवं देशी बीज का प्रयोग करते हुए खेती करते हैं। परंतु पानी का साधन नही होने की वजह से जनेश्वर राम वर्षाकाल की फसलें जैसेः धान, मक्का अरहर एवं सब्जी की खेती ही कर पाया करते थे। जिसमें परंपरागत् विधि से धान की पैदावार 5 से 8 क्विंटल प्रति एकड़ ही मिल पाती थी। शेष रबी एवं जायद काल की फसले लेने की प्रबल इच्छा तो रहती थी परंतु संसाधन का अभाव सदा ही बना रहा।

परिवर्तन के कदमः

अपनी खेती को व्यस्थित एवं बारहमासी करने के उद्देश्य से जनेश्वर राम उरावं शासकीय विभागों एवं अशासकीय संस्थाओं की बैठकों में शामिल हुआ करते थे एवं विभिन्न प्रकार की योजनाओं की जानकारी एवं ज्ञानवर्द्धक बातों को न सिर्फ सुना करते थे बल्कि गांव में आकर इसकी लोगों से चर्चा भी किया करते थे। इसी कडी में विगत वर्ष जनेश्वर राम का BRLF टीम सरगुजा ग्रामीण विकास संस्थान की ग्राम बैठकों में आना हुआ। जनेश्वर राम संस्थान की हर बैठक में शामिल हुआ करते थे जहां इन्हे मनरेगा एवं BRLF परियोजना के लाभ एवं श्री विधि से धान की खेती का नया तरीका जानने एवं सीखने को मिला । विगत वर्ष में जनेश्वर राम ने मनरेगा अंतर्गत अपनी निजी भूमि पर कूप निर्माण का मांग ग्राम सभा में रखा तथा इसके उपरांत श्री विधि अंतर्गत धान की खेती का प्रयोग करने की इच्छा भी जाहिर किया। संस्थान के प्रशिक्षण ने जनेश्वर राम सहित अन्य कई लोगों को श्री विधि से खेती करने के तरीके एवं लाभ के बारे में प्रशिक्षित किया।जनेश्वर राम ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में सक्रियता सें हिस्सा लिया और श्री विधि तरीका के अलावा जीवामृत एवं हाण्डीदवा बनाने का गुर भी सीखा।

प्रशिक्षण के उपरांत से ही जनेश्वर राम ने नये तरीके से धान की खेती करने का दृढनिश्चय किया एवं इस हेतु अपनी तैयारी करने लगे। श्री विधि तरीके से धान की खेती करने हेतु भूमि का चयन भूमि तैयार करना नर्सरी हेतु बेड तैयार करना बीज का चयन जैविक विधि से बीज उपचार जीवामृत एवं हाण्डीदवा तैयार करना इत्यादि कार्य मानसून आगमन तक जने वर राम ने पूर्ण कर लिया । मानसून के आगमन के साथ ही जनेश्वर राम ने जैविक विधि से उपचारित धान के हाईब्रिड बीज की नर्सरी तैयार कर दी जो लगभग 22–25 दिन में तैयार हो गयी।जनेश्वर राम संस्थान के सहयोगियों को नर्सरी तैयार होने की सूचना दी तथा रोपा लगाने संबंधी व्यावहारिक मार्गदर्शन करने का निवेदन किया अगले दिन संस्थान से क्षेत्रीय प्रभारी ने जनेश्वर राम द्वारा तैयार की गई धान बीज के नर्सरी के बारे में उनका अभी तक का अनुभव जानना चाहा गया तो जनेश्वर राम ने बडे उत्साह से कहा कि *भईया मैं आज तक ऐसा नजारा अपने खेत में पहले अनुभव नही किया जैसा इस बार धान की नर्सरी तैयार हुई हैं।* आगे जनेश्वर राम जो अपनी खुशी अपनी भाषा में बयां करते है उसे ऐसे समझा जा सकता है कि अगर इस बार धान की उत्पादन अच्छा होता है तो मैं अपने परिवार के लोगो को और गावं के किसानो को अपने हाथ बीज उपचार कर दूंगा और बाजार में बिक रहे हाईब्रिड धान व मक्का के बीज को क्रय करने से रोक लगाने की सलाह दे कर मना करूंगा। कुछ यही उन्होने अपनी भाषा में उत्साहपूर्वक हम लोगों के पास कहा इस प्रकार से जनेश्वर राम ने अपने धान की नर्सरी को देखर अनुभव किया जनेश्वर राम एक गरीब परिवार से ताल्लुक रखता है। जब धान की नर्सरी तैयार हो गया तो संस्थान के क्षेत्रीय एवं प्रभारी को मोबाईल पर धान की रोपा करने के लिऐ मार्गदर्शन में 1–1 फीट (पौधे से पौधा एवं लाईन से लाईन की दूरी) के अंतराल पर 1 तैयार क्यारी में रोपाई कराया गया। जिसका रकबा लगभग 30 डीसमील होगा । रोपाई कार्य पूर्ण होते ही संस्थान ने जनेश्वर राम को वीडर मशीन निःशुल्क उपलब्ध कराया तथा इसके उपयोग संबंधी भी संपूर्ण जानकारी प्रदान की। जनेश्वर राम ने 15–15 दिन के अंतराल में 1 बार वीडर मशीन का प्रयोग किया है। जिसके परिनाणाम स्वरूप एक–एक धाने में कम सें कम 20 से 25 गछार आ हैं। और दुसरी बार जब वीडर मशीन चलेगा तो और बढेगा वह अपने फसल को देखते हुए कहता है कि इस साल धान की पैदावार निश्चित रूप सें अनुमान से ज्यादा होने वाली है। आगे जनेश्वर राम कहता है अगले वर्ष सें वे अपने सभी खेतों मे श्री विधि से ही धान की खेती करेंगे जिसमें देशी एवं हाईब्रिड दोनो ही बीजों का प्रयोग करेंगे साथ –साथ मक्का दलहन तिलहन एवं सब्जी की खेती भी श्री विधि से ही करने का प्रयास करेंगे जने वर राम का कहना है कि जैसा फसल अभी दिखाई दे रही है अगर वैसा उत्पादन हो जाये तो ये श्री विधि तकनीकी ज्ञान हमारे गरीब किसानों के लिऐ किसी वरदान से कम नही होगा जिनमें आश्रितों की संख्या ज्यादा है एवं आज समय में बढते परिवार संख्या के आधार पर दिनो–दिनों भाई बटवारे और खाद का प्रयोग होने से जमीन का पैदावार कम होता जा रहा है।

परिणाम

जनेश्वर राम ने अपने पिछले वर्ष इसी खेत में हाईब्रिड धान की खेती किया था लेकिन परिणाम सामान्य एवं संतोषजनक रहा । इस वर्ष जनेश्वर राम ने संस्थान के साथियों के कहने पर एक धान प्रजाति को 3 अलग–अलग खेतों में 3 अलग–अलग पद्धतियों से लगाया । फसल कटाई के पूर्व स्थानीय स्वयं सहायता समूह की दीदीयों एवं कुछ अन्य आसपास के प्रगतिशील किसानों एवं जनप्रतिनिधियों की उपस्थिती में तीनों खेतों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया एवं 5x5 क्षेत्र का फसल कटाई कर उत्पादन माप किया गया । उक्त अभ्यास के बहुत ही सराहनीय एवं अनुकरणीय परिणाम प्राप्त हुए जिसका विवरण नीचे टेबल में

दिया गया है । उपस्थित जनसमूह ने श्रीविधी धान की फसल को सबसे उत्तम पाया एवं संकल्प लिया कि अगले वर्ष से सभी लोग अपने सभी खेतों में श्रीविधि माध्यम से ही सभी फसलों की खेती करेंगे ।

फसल उत्पादन कटाई विवरण तालीका

रोपाई की विधी	रोपाई का रकबा एकड में	एक पौधे में बालियों की संख्या	फसल कटाई माप	फसल उत्पादन
श्रीविधी धान की खेती	0.30	28	5x5	17 किलो
लाईन विधी धान की खेती	0.10	17	5x5	12 किलो
परमपरागत विधी धान की खेती	0.40	11	5x5	10 किलो